खेती की प्राब्लम हल हो जाये। दूसरी सुविधा खाद के कारखाने बनाने से नही मिलेगी बल्कि उसका प्रापर डिस्ट्रिब्यूशन आवश्यक है। इसके लिए हमारे ब्यूरोक्रैट्स अथवा हमारे जिम्मेदार प्रशासन बहुत सक्रिय कदम उठायेंगे नहीं तो जैसे देश मे भ्रष्टाचार के एक आध नमूने मिलते ही रहते हैं, हो सकता है उनका आधिक्य हो जाये।

दूसरा पहलू है सिचाई का। सिचाई के लिए हमारी सरकार ने बहुत से साधन हाथ मे लिए हैं लेकिन फिर भी जो 70 प्रतिशत लोग भारतवर्ष मे खेती पर लगे हुए है उनके लिए अभी उतना प्रोग्राम हाथ मे नही लिया गया है। इसका कारण है कि अभी हमें अपार सम्पत्ति इसमे लगानी हैं जो अभी कुछ दुर्लभ सा नजर आता है। हमारा एकौनामिक डिसबैलेन्स जो खेती के कारण ही हमारे देश मे हुआ करता है, जिसको हम महसूस भी करते है उसको पूरा करने के लिए हमे खेती पर अधिक साधन जुटाने होंगे। कुछ हमारी खेती पानी मे फसी हुई है यानी वहा वाटरलागिंग है। वहा के लिए आवश्यक है कि या तो हम चैनल्स बनाये या ड्रेनेज बनाये या फिर वहा पर पम्प्स लगा दे जिसमे पानी वहा से हट कर दूसरी जगह चला जाये। इससे दो लाभ होगे। एक तो हम पानी मे सिचाई कर सकते है और दूसरे वहा पर हमारी फसल भी हो सकती है। हमारे देश मे अभी बहुत से क्षेत्र ऐसे पडे हुए है जैसे हमने देखा हरियाणा मे कुछ रेगिस्तानी भाग है और कुछ वाटरलागिंग के इलाके है जो कि बिहार मे पडते हैं, यू० पी० और बंगाल मे भी है। अगर हम उन क्षेत्रो को ज्यादा इस्तेमाल करने की कोशिश करे तो जैसा अभी मेरे मित्र ने कहा, जमीन के डिस्ट्रिब्यूशन का जो सवाल है उसको भी बहुत कुछ हल कर सकते हैं। हमारे यू० पी० में झांसी के एरिया में, बुन्देलखण्ड के एरिया मे इतनी जमीनें पड़ी हुई हैं कि जिसका अगर हम आसानी इस्तेमाल कर सकें तो मैं समझता हूं यू० पी० का जो एक तिहाई हिस्सा बेकार सा नजर आता है वह उपजाऊ हो जाये तो हमारे देश की प्राब्लम हल हो सकती है न कि केवल यू० पी० की। यू० पी० की पापुलेशन इस देश की एक बटा 6 है। यहा के बहुत से आदमी दूसरी जगहो पर जाते है क्योंकि वहा पर उसे खेती के साधन मिलते नही हैं। अब हम इसको ज्यादा सफल बनाने के लिये क्या क्या कदम उठाये इस पर मैं प्रकाश डालूगा। हमे जमीन की सील करनी पडी। प्रान्तो ने सील किया। इससे हमे यह अनुभव होता है कि हमारी पैदावार घटी, यद्यपि कि बढनी चाहिये। लेकिन घटी। कारण कि खेतो को जोतने के लिये जो हमे ट्रैक्टर की आवश्यकता थी वह जमीन .

MR CHAIRMAN: Please continue your speech tomorrow. Now we take up Half-an-Hour Discussion

---

18 hrs

ARREST OF MEMBERS—*Contd.*

MR CHAIRMAN: I have to inform the House that the Speaker has received the following telegram, dated the 15th April, 1973, from the Superintendent of Police, Ujjain:—

> "Shri Phool Chand Verma, Member, Lok Sabha, was arrested on the 15th April, 1973, at 15.30 hours, under Sections 3/7, Essential Commodities Act, for violating ban on Inter District Movement of Foodgrains. Shri Verma was remanded to judicial custody under the order of the sub-Divisional Magistrate. Presently he is lodged in Bhaderongarh Jail, Ujjain."